

HRA and ISHA The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 5] No. 5} नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 29, 1994 (माघ 9, 1915)

NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 29, 1994 (MAGHA 9, 1915)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दो जाती है जिसने कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

Security Control of the Control of t	विषग-सूची		-
	१५५५-पू जर १६ठ		5ap
ाग !खण्ड । (रक्षा मंत्रालय को छोडकर) भारत सरकार के	A -	भाग [[खण्ड 3जा-खण्ड (।।।)मारन मरकार के	4 "
मतालयो और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी		मात्रसा (जिनने दक्षा पराचा भी	
क्षी गई विद्यितर नियमों विनियमों,		यानित है) स्रोट केन्द्रीय प ाधिकर णों	
आदेशों तथा सकल्पो से संबंधित अधिसूचनाए	61	(पत्र गामिन क्षत्रों के प्रजानने की	
।ग [बु"ड 2(रक्षा मंद्रावय को छोडकर) भारत सरकार		जोडकर) द्वारा जारी किए गए सामान्य	
के मंत्रातयो सौर उच्चतम न्यापालय ।रः		ा विक्रिक विक्यों और सांविधिक	
जारी की गई सरकारी अधिकारियों की		श देशों (दिवर्ष पामान्य स्वकृत को	
निय्क्तियो, पटोन्ननिशों, छुट्टियों आदि		उर्माबिया भी गामिल है) के हिन्दी में	
के सम्बन्ध मे अधिसूचनाएं 💌 •	81	अधिकृत पाठ (ऐंग पाटो को छोड़कर	
ाग Lखण्ड 3-रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए		जो भारत के राजपत के खण्क 3	
संकल्पो धीर असाविधिक आदेशो के		र ३०६ ४ न नगित होने हैं)	•
सम्बन्ध मे अधिसूचनाएं		भाग !खण्ड 4रज्ञा मत्रांनरे ारा जारी किए गए	
ाग Iखण्ड 4रक्षा मत्नालय द्वारा जारी की गई		माविधिक नित्रम और आदेश .	•
सरकारी अधिकारियों की नि युक्तियो ,		भाग [[] प्रण्ड 1उच्च स्थायालयो, नियत्रक भीर महानेखा-	
पदोन्नतियों, ख्रुट्टियों आदि के सम्बन्ध		ररीझ ह सत्र लोह सेवा आयोग, रेल	
में प्रधिस्चनाएँ	191	विमाग ग्रीर भारत मरकार से संबद्ध	
ाण्ड IIखण्ड 1प्रधिनियम, अध्यादेश स्रोर विनियम .	ung-rid	ग्रीर अधीतस्य कार्यालयों द्वारा द्वारी	
त्य [[—खण्ड 1म—ग्रिखनियमों, ग्रव्यादेशों भौर विनियमों		की गई अधिसुवनाएं	97
का हिन्दी भाषा मे प्राधिकृत पाठ .	*	**	3 1
u [[—खण्ड 2विधेयक तथा विधेयको पर प्रवर	•	भाग [[[खण्ड 2पेटेन्ट कार्यात्र द्वारा जारी का गड	
समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*	ाटेन्टो प्रोर ाडनाइनो से संबंधित स्थितकार स्थापन	
***		अप्तिपुवन ए और वोडिन	87
भग [[—-खण्ड 3—-उप-खण्ड (1)—-भारत सरकार क संत्रालयो (रक्षा मंत्रालय को छोडकर)		नाग । [[वण्ड 3नुष्य आयुक्तो के प्राधिकार के अधीन	
श्रीर केन्द्रीय प्राधिकरणों (सघ शासिन		स्यता जारी की गई अधिमूचनाए	
अर कन्त्राच आवकरणा (सप सासा क्षेत्रो के प्रशासनो को छोडकर)		गा 🌃वण्ड ६विविध अधिनुवनाए जिनन साविधिक	
द्वारा जारी किए गए सामान्य सावि-		तिहामा क्षारा जाना तागई अधिमूतनाए,	
धिक नियम (जिसमे सामान्य स्वरूप		न देश विज्ञान और नोटिंग शामित	
के आदेश श्रीर उपविधिया आदि भी		·	755
गामिल है) . • •	•	भाग IVतैर-इरहादा च्यानचो और वैर-सरकारी	
ा [[खण्ड 3उप-खण्ड (ii)मारन सरकार के		निकाया द्वार जारी किए गए विश्वापन	
११६1—७०६ ३—-उपचण्ड (॥)—नगरन सरकार क मंत्रालयो (रक्षा मंत्रालय की छोडकर)		भौंं नोटि-	17
भवासका (रजा नजासक का ठाडकर) भीर केन्द्रीय प्राधिक र णो (संघ			
शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़-		मार ४- अने और हिस्दी नेनो में अन्य मौर	
कर) द्वारा जारी किए गए सीविधिक		न्-पृके अकडी को द र्शा ने	
कर) धारा जारा क्षेत्र गर सामावया सादेश भीर बधिसूचना ए	•	वाना अन्पूरक	暈
व्यविश मार मासपूजाए	-		

CONTENTS

P	AGB		PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non- Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court. PART I—SECTION 2—Notifications regarding Ap-	61	PART II — Section 3 — Sug-Sec. (iii) Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence)	
pointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the		and by Contral Authorities (other than Administration of Union Territories)	•
Supreme Court . PART I—Section 3—Notifications relating to Reso-	81	PART II —Section 4—Statutory Rules and Orders 185 and by the Ministry of Defence	•
lutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence. PARTI Section 4-Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Govern-	_	Pare III —Section !—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Com-	
ment Officers issued by the Ministry of Defence PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regula-	191	mission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	97
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	•	PART III —Section 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	87
PART II—Section 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills		PART III —Section 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commis-	
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Byelaws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	•	PART III —Section 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	755
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and		PART IV —Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies •	17
by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories).	•	PART V —Supplement showing Statistics of Births and Deaths are both in English and Hindi	

भाग I---सण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत परकार के पंत्रातयों और उच्चतप न्यायाच्य द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आवेशों और संकल्पों से संबंधित अधिपुत्रताएं [Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations Orders and Resolutions (segme

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

जल संसाधन मंत्रालय

मई दिल्ली, विनांक 17 जनवरी 1994

विषय : जलीय अनुसंधान संबंधी भारतीय राष्ट्रीय सभिति का पुनर्गठन

सं के क जि आ सं 10/9/93/प्रार एण्ड दी ०/-- जलीय अनुसंघान संबंधी भारतीय राष्ट्रीय समिति के पुनर्गठन के सबंध मे पहले के संकल्प धावेश सं 21/3/89-स्था । II (ए) दिनोक 29-10-1990 में प्राधिक संबोधन करते हुए भारत सरकार निश्निलिखन संरचना, कार्यो भीर संबंध प्रावधानों के साथ समिति का पुनर्गठन करती है:---

1. संरचना

सम्पन

(इ) निरेश्तक

केन्द्रीय जल एवं विद्युत <mark>मनुसंधान</mark> केन्द्र,पुणे ।

सदस्य

- (का) मुख्य प्रभियंता (प्रभि० एवं धनुसंघान) जिसका नामांकन सदस्य(प्रभि० एवं धनुसंघान) द्वारा किया जाना है।
- केन्द्रीय जल भ्रायोग, नई दिल्ली।
- (स) मुक्य अभियंता (अल विद्युत स्कंध) जिसका नामांकन सदस्य (जल विद्युत स्कंध) द्वारा किया जाना है।

केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, नई दिल्ली।

(च) मुख्य प्रमियता जिसका नामांकन ग्रध्यक्ष द्वारा किया आना है।

केंग्नीय प्रवृषण निर्मक्षण बोर्ब, प्रवेश भवन, सी० बी० बी० व कार्यालय काम्पलैक्स, ईस्ट प्रजून नगर, बाहुदरा, दिल्ली-110032

(७) उपाध्यक्त

गंगा बाढ़ नियंत्रण घायोग, सिचाई भवन, पटना-800015

(च) एक प्रतिनिधि 🚦

भारतीय पस्प विनिर्माता संघ काकव चैम्बर्स, वर्ली, भस्बई-181

(छ) प्रमुख अभियंता से धथना अभावतंन आधार पर तीन राज्य

(स) मुख्य अभियंता

(जल संसाधन मंद्रालय द्वारा 3 वर्ष की घ्रवधि के क्रियु नियुक्त किया आयुगा)

सदस्य

(उ) निवेशक जलीय से धनुसंधान

मांध्र प्रदेण, ग्रसम, बिहार, गुजरात, केरल, कर्नाटक,

(ण) त्रयोगशाला/संस्थान

मध्य प्रवेण, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पंजाब, तमिलनाडु, उत्तर प्रवेण, पश्चिम बंगाल ।

- (त) जलीय विज्ञान में संबंधित राष्ट्रीय मन्तरीष्ट्रीय संबंधि के सबस्थों में जलीय
- से प्रमुसंधान के क्षेत्र में
- (थ) कार्यकर रहेतीन विक्यात शिक्षाविव्

(जल संसाधन मंत्रालय द्वारा तीन वर्ष की भविध के लिए नियुक्त किया जाएगा।)

(भ) मध्यक्ष/उपाध्यक्ष

भारतीय जलीय विज्ञान समिति

(त) निदेशक (धनुसंधान एवं विकास एवं विशिष्ट विक्लेषण) । केम्द्रीय जल आयोग, विषयवस्तु प्रमाग का प्रधान ।

सदस्य-सचिव

- (प) मुख्य अनुसंधान अधिकारी केन्द्रीय जल भीर विद्युत अनुसंधान केन्द्र, पुणे ।
- समिति के कार्य निम्म प्रकार होंगे :---
- 2.1 (क) केम्ब्रीय भीर राज्य सरकारों घीर उनकी एजेंसियों को जलीय इंशीनियरी संबंधित मामलों में सलाह देना ।
 - (का) समिति को परामर्श देने हेनु वियोध समस्यामों पर विकार करने के लिए विशेष कार्य दल/तिशंषकों का पैनल नियुक्त करना।
- 2.2 (क) राष्ट्रीय भीर प्रन्तरिष्ट्रीय संगठनों संबंधित जानकारी एकआ करके ग्रीर उसका प्रचार-प्रसार करके जलीय इंजीनियरी की विभिन्न शाखाओं में नवीनतम विकास की तैयार करना भीर इसे ग्रग्रतन करना ।
 - (का) जलीय इंजीनियरी के विकास के ऐतिहासिक मूल्यांकन का ध्रध्ययन करना भीर इस श्रेल में मनुसंघान के लिए परिप्रेट्य धायोजना मारंभ करना ।
 - (घ) पत्रिकाणों, झनुसंधान संबंधी समाचारों/नार-संप्रष्ट का प्रकाशन करके जलीय इंत्रीनियरी संबंधित जानकारी का प्रचार-प्रमार करना ।

- 2.3 (क) जलीय इंजीनियरी की विभिन्न भाखाओं के गुणवत्ता फेन्ग्रीं को मान्यता देने की मिकारिय करना और उमके लिए केन्द्रीय विल की स्थायरथा करने की मिकारिय करना।
 - (ख) जलीय पनुसंधान संस्थाओं के प्रवसंख्यात्मक विकास के लिए वित को व्यवस्था करने की सिफारिश करना।
 - (ग) विभिन्न संस्थाओं के अनुसंधान कार्यक्रमों में परस्पर आधानि बचने के लिए प्रमाशी समन्त्रय बनाय रखना :
 - (घ) मानव मंसाधन विकास के कार्यंथमों को बढ़ावा बेना जिसके कि प्रनुसंघान कर्मचारियों को निशेषता हामिल हो सके घौर उरक्रकेट अनुसंधान कार्मिकों को प्रोत्साहन देने की सिफारिया करना ।
- 2.4 (क) देश मे अनुसम्भान कार्यकलायों के स्तर को ग्रन्तरिष्ट्रीय स्तर पर लाने के उद्देश्य से जलीय इंजीनियरी के ऐसे क्षेत्रों की पष्टचान करना जहां क्लाल ध्यान दिये जाने की प्रावश्यकता है धश्रवा जिसमें नई प्रकृतिया लाने की जरूरत है।
 - (ख) मूल एवं प्रायोगिक अनुसंधान, क्रिया संबंधी अनुसंधान एवं भ्रन्य क्षेत्रों के संबंध में वेश की संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले अनुसंधान कार्यक्षमों को तैयार करना, समन्वय करना और विस्त की व्यवस्था करने की सिफारिया करना ।
 - (ग) ऐसे क्षेत्रों में, जिन्ह समिति द्वारा भ्राभिकृत्यि, प्राथमिकता वार्ष क्षेत्रों के रूप में श्रीभजात किया गया है, भनुसंधान श्रध्ययनों भौर विकासात्मक कार्यकलायों को शृष्ट करने के वास्ते राष्ट्रीय संस्थायों को बढ़ावा देता, श्रावण्यकतानुगर समिति विशिष्ट विषय में भनुसंधान/विकास कार्य शृष्ट करने के लिए संस्थाभ्रो को नामांकित कर सकती है ।
 - (ष) जलीय इंजीनियरी में प्रमुसंधान एवं विकास कार्यकलापी को णुक् करने, सूचना का प्रचार-प्रसार, जनवेतमा कार्यक्रम में हिस्सेदारी श्रादि के बास्ते स्वैच्छिक व्यावसायिक निकायो, गैर-वाजिज्यक, गैर-सरकारी संगठनों को बढ़ाबा देना।
 - (क) मन्य राष्ट्रीय समिनियो/ बोर्को, संबंधित भारत सरकार/राज्य के मंत्रालयों, वैज्ञानिक एवं श्रीकोगिक घ्रनुसंधान परिषद की प्रयोग-शालाभों, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, शंजीनियरी महा-विद्यालयों भौर पोलीटेकनीकों, विश्वविद्यालयों भौर ग्रन्य भौकाणिक संस्थाभों के साथ प्रभावी सहयोग बनाए रखना ।
 - जलीय इंजीनियरी में प्रौद्योगिकी कार्य गुरू करने के वास्ते ऋण मुहैया करके देकी उद्योग को बढावा देना ।
 - (छ) जाजीय इजीनियरी के क्षेत्र मे अनुसंघान योजनाओं के संबंध मे कार्यकारी संस्थाओं द्वारा की गई प्रगति का प्रबोधन करना।
- 2.5 (क) जलीय ६ जीनियरी सुवधित घन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भारत की प्रभावी भागीवारी को बढ़ाया देना और समन्वय करना तथा सावस्यकतानुसार ऐसी भन्तर्राष्ट्रीय निकायों के लिए राष्ट्रीय तथित के रूप में कार्य करना ।
 - (चा) जलीय इजीनियरी के क्षेत्र मे ग्रैक्शिणक सौर प्रक्रिक्षण एव जल-ग्राम्त विकास क.र्यक्रमों को बढावा देना।
 - (ग) जन चेतना कार्यक्रमो का समर्थन करने के लिए गोष्टियों/सम्मेलमो/ कार्यशालामों की अ्यवस्था करना भीर भायोजन करना ।

3. **बैट**क

समिति की भावश्यकतानुसार बैठक होगी तथापि वर्ष में कम-से-कम एक बार बैठक होगी ।

4. उप समिनियां

समिति अधिक से अधिक पांच उप समितियों की नियुक्ति कर सकती है जिनमें अधिक में अधिक पांच सदस्य होंगे। भारतीय राष्ट्रीय समितियों के सदस्य हो उप समितियों के सदस्य होने के पांच है।

5. सिषवालय

भारतीय जलीय श्रनुमंधान समिति श्रीर इनकी उप समितियों का सिविबालय निवेशक, केंद्रीय जल एवं विद्युत श्रन्मंधान केंद्र, पूर्ण के प्रशासनिक नियंद्रण में होगा ।

५ व्यय :

- (क) सरकारी सदस्यों के याद्वा भला(महंगाई असा पर होने बाला व्यय उन स्रोतों से पूरा किया जाएगा जिनमे वे अपना वेतन प्राप्त करने हैं और गैर सरकारी सदस्यों पर श्रोते वाला स्थय भारतीय राष्ट्रीय जल य अनुसंधान समिति की निविसों/अस्दानों से पूरा किया जाएगा ।
- (ছা) सचिवालय के कार्यकलापों भीर उपर्युक्त ও (क) में उल्लिखित पर होने बाला ब्यय श्राप्त एउट डी॰ एবলে प्रायधानों से बसूल किया আएব। ।

आदेण

न्नादेश दिया जाता है कि उपर्यवत संकरूप को भारत के राजपन्न में प्रकाशित किया जाए ।

> हम्ताश्रर अप**ठनीय** यवर मनिक

विषय :---जल विज्ञान संबंधी भारतीय राष्ट्रीय भामित का पूनर्गठन ।

सं० के० ज्ञ० श्रा०/10/9/93-स्रार० एण्ड श्री०/52--जल विज्ञान संबंधी भारतीय राष्ट्रीय समिति के पुनर्गटन के गबंध मे पहले के संकल्प/आयेण मं० 21/3/89-स्था० दो दिनांक 21-3-1930 मे श्रीणिक मंगोधन करते दुए भारत सरकार निम्तलिबित्त मण्यता, कार्या और मंबङ पावधानों के साथ गमिति का पुनर्गटन करती हैं -

1. सरचना

ष्प्रध्यक्ष

(ক) য়ংযক

केन्द्रीप जल पायोग, वर्ड दिल्ली

कार्यकारी-सवस्य

(ख) निदेशक

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुक्की

सन्स्य

(ग) उप महानिदेशक जिसका नामाकन महानिदेशक द्वारा किया जाना है भृतिक्षानः सरयानः, 27, अवाहरूलालः नेहरू मार्गः, कलकः भा–700016ः

(घ) श्रध्यक्ष

केन्द्रीय मूमिगा जल बोर्ड जामनगर हाऊस, मार्नामह राड, नई दिल्ली भारतीय मीसम विभाग, गीसम भवन, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

(छ) उप महानिदेशक जिसका नामांकन महागिदशक द्वारा किया जाना है (च) वैज्ञानिक ^(*É')

भारतीय रिमोट सेंसिंग एजेंसी, वालानगर

हैदराबाद

(छ) तीन केन्द्रीय मगटतो ते पतिनिधि जो मुख्य श्रिभियंता ने नीचे के मे पद के न हो

(田)

(জা) छ॰ राज्यों के प्रतिनिधि जो निवेणक के पद में नीजे के में पद के न शे

(ण)

- (म) जल विज्ञान क्षेत्र में कार्यरत तीन प्रसिक्क णिक्षाविद् जो राष्ट्रीय/ से अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से जुड़े हों
- (द) (क्रम सं० 7 में 18 को जल समाधन महालय होरा 3 वर्ष की क्षत्रधि के लिए नियुक्त किया जाएगा।
- (ध) प्रध्यक्ष भारतीय जल विज्ञान ऐसोसिएणत, सङ्की
- (न) निदेशकः ग्रनुसंद्रान एवं विकास एवं विशिष्ट विश्लेषण (के०ज०भा०) एवं प्रमुख विषय वस्तु प्रश्नाग

सदस्य-गचिव

(प) वैज्ञानिक ''ई'' राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, घड़की

- 2. समिति के कार्य निम्न प्रकार होंगे :---
- 2.1 (क) केन्द्रीय भीर राज्य सरकारों भीर उनकी एजेंसियों की जल विज्ञान से संबंधिन मामलों में सलाह देना।
 - (ख) समिति को परामर्ण देने हेनु विशेष समस्याभ्यो पर विचार करने के लिए विशेष कार्यवल/विशेषकों कार्यभल नियुक्त करना ।
- 2,2 (क) राष्ट्रीय धौर श्रम्तर्राष्ट्रीय मगठनों में संबंधित जानकारी एक करके जल विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में नवीनतम विकास को समय-समय पर तैयार और ६से श्रश्नत करना ।
 - (ख) जल विज्ञान के विकास के ऐतिहासिक मूल्यांकन का अध्ययन करना और इस क्षेत्र में अनुसंधान के लिए परिश्रेक्ष्य आयोजन आरम करना।
 - (ग) पक्षिकाओ, अनुस्रधान संबंधी समाचारों/मार-संग्रह का प्रकाश करके जल विज्ञान से संबंधित जानकारी का प्रचार-प्रमार करना ।
- 2.3 (क) जप विज्ञान को विभिन्न माखाम्रो के गुणवता भान्यता केन्द्रों को मान्यता देने की सिफारिश करना मीर उनके लिए केन्द्रीय वित्त की अवस्था करने की सिफारिश करना ।
 - (ख) जल विज्ञान संस्थाओं के धवमंद्रज्ञात्मक विकास के लिए विन की व्यवस्था करने की सिफारिश करना।
 - (ग) विभिन्न मस्याद्यां वे अनुसधान कार्यक्रमो मे परस्पर व्याप्ति मे बचने के लिए प्रभावी ममन्वय बनाये रखना ।
 - (प) भानव संसाधन विकास के कागत्रमां को बढ़ावा देना जिससे कि अनुसंधान कर्मचारियों को विशेषकता हासिल हो सके और उत्कृष्ट अनुसंधान कार्मिकों को प्रोत्साहन देने की निकारिश करना

- 2.4 (क) देश में प्रमुक्तधान कार्यकलाकों के स्तर को अन्तरिष्ट्रीय स्तर लामें के उत्देश्य से जब विकान के ऐसे क्षेत्रों की प्रह्वान करना जब्दां तस्काल क्यान किसे जाने की आवश्यकता है अथवा जिसमें मई पद्मतियां लाने की जरूरत है ।
 - (ख) जल विज्ञास संबंधी मूल एव प्रायोगिक धनुसंधान, किया संबंधी धनुसंधान एवं घत्य क्षेत्रों के संबंध में देश की संस्थामों द्वारा किए जाने वाले घनुसंधान कार्यश्रमों को तैयार करना, समस्वय करना श्रीर विक्त की व्यवस्था करने की सिफारिश करना।
 - (ग) ऐसे क्षेत्रों में, जिन्हें समिति द्वारा प्रभिषृद्धि/प्राथमिकताची वाले क्षेत्रों के रूप मे भिकान किया गया है, धनुसंघान घष्ट्ययमों और विकासात्मक कार्यकलापों को मुरू करने के वास्ते राष्ट्रीय संस्थाओं को बढ़ावा देना, धावययकतानुसार समिति विशिष्ट विषय में अनुसंधान/विकास कार्य शुरू करने के लिए संस्थाओं को नामांकित कर सकती है।
 - (व) जल विज्ञान में अभुसंधान एवं विकास कार्यकलायों को एक करके सूचना का प्रचार-प्रसार, जनजेतना कार्यक्रम में हिस्सेवारी प्राधि के बाक्ते स्वैष्टिक व्यवसायिक निकायों, गैर-पाणिक्यक, गैर-सरकारी संगठनों को बढ़ावा देना ।
 - (ङ) अन्य राष्ट्रीय समितियों/बोर्डों, संबंधित भारत सरकार/राज्य के मंत्रालयों, वैज्ञानिक एवं भौधोगिक अनुसंधान परिषद् की प्रयोग- गालाओं, भारतीय प्रोधोगिकी संस्थानों, इंजीलियरी महा- विद्यालयों भीर पोलीटेकनीकों, विश्वविद्यालयों भीर प्रत्य शैक्षणिक संस्थाओं के साथ प्रभावी सहयोग बनाए रखना !
 - (भ) जल विकास में प्रोद्योगिकी कार्य शुरू करने के वास्ते ऋण मृहैया करके देशी उद्योग को बढ़ावा देना ।
 - (छ) जल जिज्ञान के क्षेत्र में धनुसंधान योजनाओं के सबंध में कार्यकारी संस्थाओं द्वारा की गई प्रगति का प्रबोधन करना ।
- 2.5 (क) जल विक्रान से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भारत की प्रभावी भागीदारी को बढ़ावा देसा छौर समन्वय करना तथा आवम्यकतानुसार ऐसी झन्तर्राष्ट्रीय निकायों के लिए राष्ट्रीय सिमित के रूप में कार्य करना ।
 - (ख) जल विज्ञान के क्षेत्र में शैक्षणिक और प्रशिक्षण एवं जनशक्ति विकास कार्यक्रमों की व्यवस्था करना और प्रायोजन करना।
 - (ग) जल विज्ञान के क्षेत्र में गोष्टियों/सम्मेलन/कार्यकालाएं भागोजित करना, जन जागरूकता कार्मक्रमों को सहायता देना तथा धनुसं-धान एवं विकास समीक्षा सन्नों को श्रायोजित करना:

य श्रीराक

समिति की भावश्यकतानुसार बैठक होगी ध्रथापि वर्ष में कम से कम एक बार बैठक होगी ।

4 उप समितियां

मिति प्रधिक से धिषक पांच उप मिनितियों की नियुक्ति कर सकती है जिसमे धिक से प्रश्लिक पांच सदस्य होंगे। भारतीय राष्ट्रीय सिमितियों के सदस्य बनने के पाल है।

- 5. म**भिकाल**य
 - भारतीय जल विज्ञान भनुसंधान समिति भौर इसकी उपसमितियो का सचिवालय निदेशक, राष्ट्रीय जल विज्ञान सस्थान, रूडकी के प्रशा-सनिक निवंत्रण में होगा।
- (i. **ज्य**य
 - (क) सरकारी लयस्यों के यात्रा भत्ता/महगाई भत्ता पर होने बाला व्यय उन स्क्रोलों ते पूरा किया जाएगा जिनसे के प्रपना केतन

प्राप्त करते हैं भीर गैर-सरकारी सबस्यों पर होने वाला स्थय भारतीय राष्ट्रीय जल विज्ञान संबंधी समिति की विक्रियों/ अनुदायों से पुरा किया जाएगा ।

(ख) मिलवालय के कार्यकलापों झौर उपर्युक्त 6 (का) मे उल्लिखित पर होने वाला व्यय झार० एण्ड क्षी • प्लान प्रानधानों से वसूल किया जाएगा ।

आवेश

आवेश विया जातः है कि उपर्युक्त संकल्प को भारत के राजपण में प्रकाशित किया जाए ।

> अन्प कृमार सक्या मनर समित

सै० के० ज० आ०/10/8/83-पाए० एण्ड शि०/54-शिलायांत्रिकी एमं सुरंगम तकनीकी पर भारतीय राष्ट्रीय समिति के पुनर्गठन के संबंध में पहले के संकल्प /धावेश सं० 24/3/88-स्था० दो (ए) के विनोक्त 31 मई, 1991 में धांशिक संशोधन करते हुए भारत सरकार निम्मिलिक संरचना, कार्यों तथा सम्बद्ध प्रावधानों के साथ उक्त समिति का पुनर्गठन करती है

1. संरचना

धन्यक

(क) निवेशक

केन्द्रीय मृदा एवं सामग्री धनुसंवाम गाला, नर्द्र दिल्ली

सदस्य

- (य) मुख्य प्राणियन्ता (प्रधि ० एवं प्रमु) जिसका केन्द्रीय अन प्रायोग नाभकित सवस्य (प्रधि २ एवं प्रमु ०) द्वारा नई विस्सी किया जाना है।
- (ग) मिदेशक भारतीय भूविज्ञान (ग्रामियांत्रिकी भूविज्ञान) सर्वेकण कलकला
- (ष) वैज्ञानिक राष्ट्रीय भू-भौतिकीय भृतुसंघान संस्थान, हैवराजाव
- (ङ) निवेशक राष्ट्रीय विसायक्रिकी संस्थान, कोलार
- (च) निवेशक (सी०एस० ग्रार० एस०) द्वारा निवेशक केन्द्रीय अनम नियुक्त व्यक्ति जिनका पद वैद्यानिक "ई" श्रनुसंद्यास काला, से नीचे का नहीं। श्रन्ताव
- (छ) कमावर्तन ग्राधार पर तीन जल विद्युत में निगमों के प्रतिनिधि जिसका पद मुख्य
- (म) अभियंता के पद से नीचे का न हो । (जल संसाधन मंत्रासय द्वारा उपर्व की सचित्र के लिए नियुक्त किया जाएगा)
- (জা) निदेशक छ: राज्यों सं से राज्य अनुसधान संस्थान/प्रयोगशाला (সনাৰ্বন के प्राक्षाए
- (ण) पर (जल संसाधन मंत्रालय द्वारा 3 वर्ष की धविष के लिए नियुक्त किया जाएगा)

- (त) शिलायोतिकी एवं सुरंगन तकमीकी के से अंत में काम कर रहे तीन प्रसिद्ध शिका-
- (व) ^{*} विद् (जल संसाधन मंत्रालय द्वारा 3 वर्ष की खबिध के लिए निम्कत किया जाएगा)
- (घ) श्रष्ट्यक्ष भारतीय शिलायांत्रिकी एवं सुरंगन तकनीकी सोसाइटी
- (न) निदेशक (धमु० एवं विकास एवं विशिष्ट केस्प्रीय जल आयोग विश्लेवण) एवं प्रमुख विवय वस्तु प्रभाग

सवस्य-सणिव

(प) मुख्य अनुसंधान प्रधिकारी केलीय मृद्धा एवं सामग्री अनुसंधानशाला, नद्दी विरुक्ती ।

- 2. समिति के कार्य निम्न प्रकार होंगे :---
- 2.1 (क) केल्क्रीय भीर राज्य सरकारों भीर उनकी एजेंसियों को शिला-यांत्रिकी तथा सुरंगन सकनीकी से संबंधित मामलों में सलाह देना ।
 - (का) समिति को परामर्श देने हेतु विशेष समस्याधों पर विचार करने के लिए विशेष कार्येदल/विशेषणों का वैमल नियुक्त करना ।
- 2.2 (क) राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से संबंधित जानकारी एकअ करके शिलायांतिकी तथा सुरगन तकनीकी की विभिन्न साखाओं में नवीनतम विकास को समय-समय पर तैमार और इसे अक्षतम करना ।
 - (का) जिलायांतिकी तथा सुरंगन तकनीकी के विकास के ऐतिहासिक मूल्यांकन का अध्ययन करना और इस क्षेत्र में अनुसंधान परिप्रेक्य आयोजना चारंच करना ।
 - (ग) पत्निकामों, अनुसंधान संबंधी समाभारों/सार-संग्रह का प्रकाशन करके शिलायोलिकी तथा सुरंगन तकनीकी से संबंधित जानकारी प्रवार-प्रसार करना ।
- 2.3 (क) सिलामांत्रिको तमा सुरंगन तकनीको की विभिन्न सकामों के गुणवत्ता केन्द्रों को सन्यता देने की सिफारिस करना भीर उनके लिए केन्द्रीय विशा की व्यवस्था करने की सिफारिस करना ।
 - (थ) शिल।यांतिकी संधा सुरंगम तकतीकी संस्थाओं के प्रवसरकता-रमक विकास के लिए विक्त की व्यवस्था करने की सिफारिश करना ।
 - (ग) विधिन्त संस्थातों के भनुसंधान कार्यक्रमों में परस्पर व्यापित से वधते के लिए प्रभावी समन्त्रय बनाये रखता ।
 - (घ) मानक संसाधन विकास के कार्यक्रमों को बढ़ावा देना जिससे कि प्रनुसंधान कर्मचारियों को विशेषज्ञता हासिल हो सके भौर जरक्षण्ड प्रमुसंधान कर्मियों को प्रोत्साहन देने की सिफारिश करना ।
- 2.4 (क) वेश मे अनुसंधान कायंकलापी के स्तर को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लाने के उद्देश्य से किलायांत्रिकीतथा सुरंगन किनोक के ऐसे क्षेत्रों की पहचान करना जहां तत्काख ब्यान विये जाने की आवश्यकता है अथवा जिसमें नई पश्चतियां लाने की जरूरत है।

- (ख) शिलायक्तिकी तथा सुरंगन तकतीकी संबंधी मृल एवं प्रायोगिक प्रमुसंधान, किया संबंधी भमुसंधान एवं प्रत्य क्षेत्रों के संबंध मैं थेवा की संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले भनुसंधान कार्यकर्मों को तैयार करना, समन्वय करना भीर वित्त की व्यवस्था करने की सिफारिया करना ।
- (ग) ऐसे क्षेत्रों में, जिल्हें समिति द्वारा सिभवृद्धि प्रियमिकलाओं वाले क्षेत्रों के रूप में सिभक्षात किया गया है, अनुसंद्वान सन्ययनों और विकासात्मक कायकलापों को शुरू के करने वास्ते राष्ट्रीय संस्थाक्षी को बदाबा देना, झावस्यकतानुसार समिति विशिष्ट विषय में झनुसंद्वान/विकास कार्य शुरू करने के लिए संस्थाओं को सामांकित कर सकती है ।
- (घ) शिलायांक्रिकी सथा सुरंगन नकमीकी में प्रनुसंधान एवं विकास कार्यकलायों को शुक्र करके सूचना का प्रचार-प्रसार, अनचेसना कार्यक्रम में हिस्सेवारी प्रावि के वास्ते स्वैच्छिक व्यवसायिक निकायों गैर-वाणिज्यिक, गैर-सरकारी संगठमों को अवृत्वा वेना ।
- (क) अभ्य राष्ट्रीय समितियों/बोर्डों, संबंधित भारत सरकार/राष्य के मंत्रालयों, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंघान परिषद की प्रयोगणालाश्रों, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, इंजीनियगै महाविद्यालयों और पोलीटकनीकों, विश्वविद्यालयों और प्रक्ष्य गैक्षणिक संस्थाओं के साथ प्रभावी सहयोग बनाए रखना ।
- (क) शिलायांक्रिकी तथा सुरंगन तकनीकी से श्रीक्योगिकी कार्य शुरू करने के वास्ते ऋण मृहिया करके देशी उद्योग को बढ़ावा देना।
- (छ) शिलायांक्रिकी तथा सुरगत सकतीको के क्षेत्र में मनुसंधान योजनामों के संबंध में कार्यकारी संस्थामों द्वारा की गई प्रगति का प्रकोधन करना ।
- 2.5 (क) शिक्षायांक्षिकी तथा सुरंगन तकनीकी से संबंधित प्रन्तर्राष्ट्रीय कार्यंक्रमों में भारत की प्रभावी भागीवारी को बढ़ावा देना प्रौर समन्वय करना तथा आवश्यकतानुसार ऐसी प्रन्तर्राष्ट्रीय निकासों के लिए राष्ट्रीय समिति के रूप में कार्य करना ।
 - (च) शिक्षायांत्रिकी तथा सुरंगन तकनीकी के क्षेत्र में शैक्षणिक और अशिक्षिण एवं अनगक्ती विकास कार्यकर्मों की व्यवस्था करना भीर भाषोजन करना ।
 - (ग) तिसायांकिकी तथा सुरंगन तकनीकी के क्षेत्र में गोष्टिकों/ सम्मेलन/कार्यवाकाएं मायोजित करना, जन जानकतता कार्यकों को सहायता देना क्षण अनुसंधान एवं विकास समीका सलों को मायोजित करना ।

3. das

समिति की भाषस्थकतानुसार बैठक होगी तथापि वर्ष में कम से कम एक बार बैठक होगी ।

4. उपत समितिया

समिति मिश्रक से श्रक्षिक पांच उप-समितियों की नियुक्ति कर सकती है जिसमें मिश्रक से मिश्रक पांच सवस्य होंगे । भारतीय राष्ट्रीय समितियों के सवस्य ही इन उप-समितियों के सवस्य बनने के पान्न हैं।

5. सचिवास्य

भारतीय शिक्षायांत्रिकी तथा सुरंपन सक्तीकी समिति और इसकी उप-समितियों का सिवनालय निवेशक, केन्द्रांथ भृदा एवं सामग्री प्रनुसंवानजाला, नर्ष विक्ती के प्रमासनिक नियंत्रण में श्लोगा ।

6. स्पय

- (क) सरकारी सवस्यों के याका भक्ता/मंहगाई भक्ता पर होने बाला क्यय उनकोतों से पूरा किया जाएगा जिनसे वे भपना वेतन प्राप्त करते हैं और गैर सरकारी सवस्यों पर होने वाला व्यय चारतीय राष्ट्रीय शिकायांत्रिकी तथा सुरंगन तकनीकी संबंधी समिति की विश्वयों/प्रजुवायों से पूरा किया जाएगा ।
- (अ) सिषधालय के कार्यकलायों और उपर्युक्त 6(क) में उल्लिखित पर होते बाला ज्यम झार० एष्ट डी० प्लान प्रावधानों से बसूल किया जाएगा।

आवेश

मावेश विधा जाता है कि उपर्युक्त संकल्प को भारत के राजपन में प्रकाशित किया जाए।

> ह**े प्रपटनीय** अ**पर समिव**

मं० कें जि जि भार 10 /9/93-मार० एव्ड की ब/56--भारतीय राष्ट्रीय निर्माण सामग्री एवं सरचना समिति के गठन से संबंधित पूर्व गकरूप मानेण स० 22/1/92-म्था० वो दिनांक 5 ग्रगस्त 1992 में शांणिक समोधन करते हुए भारत सरकार निम्नलिखित सम्बद्धन, कार्यो तथा सम्बद्ध प्रावधानों के साथ उक्त समिति का पुनर्गठन करती है:

।, संबदन

ग्रहयक्ष

(क) निवेशक कंग्द्रीय मृदा एवं सामग्री श्रमुसंश्रात शाला, नई विश्ली

गवस्य ,

- (सा) सदस्य (अभि० एवं अनु०) केन्द्रीय जल आयोग, अपरा नामित अभिकल्प नहीं दिल्ली एवं अनुसंधान) स्कंध के मुख्य अभियन्ता
- (ग) कार्यपालक अभियंता द्वरा राष्ट्रीय अल विश्वत निगम, नामित मुख्य धामियंतः तद्व विरुषी
- (ब) महानिवेशक राष्ट्रीय मीमेंट तथा भवन गामग्री परिषद्, बल्लभगढ (हरियाणा)
- (क) निवेशक संरचनात्मक प्रभियांक्रिकी प्रतुक्षधान केन्द्र, गाजियासाव
- (क) भुक्य ध्रमियंता केन्द्रीय लीक निर्माण विभाग, न्द्री विस्ती
- (छ) प्रमुख मियंता भववा तीन राज्य
- (अ) मुख्य ग्रमियंता (कमावर्तन ग्राह्मार पर)
- (হা) राज्य धनुसंधान छ: राज्य
- से संस्थानों प्रयोगणालाभीं (क्रमावर्तन भाषार पर)
- (ण) के निदेशक
- (त) निर्माण सामग्री कंकीट प्रौद्योगिकीसंरचनाश्रों के क्षत्र में कार्यरत से तीन प्रसिद्ध शिक्षाणिय
- (व) (कम सं० सात से प्रठारह तक जल संसाधन मंद्रासय द्वारा सीन वर्षों की ध्रविष के खिए नामित किए जाएंग ।

सवस्य

- (क) अन्यवर्ग वर्षाध्यक्ष भारतीय निर्माण सामकी एवं संरचना सीसाबटी
- (म) निवेशक, प्रमुखकान एवं केन्द्रीय चंच आयोग तथा विकास एवं विशिष्ट विषय वंच्यु प्रमाग का प्रशान विश्ववेषव नवस्म्र∦सचिव
- (प) मुख्य प्रनुसंधान पश्चिकारी केन्द्रीय मुद्दा एवं सामग्री
 प्रमुसंबाच गाला, नई दिल्ली
- 2. समिति के कार्य चित्रनंत्रस होंगे:
- 2.1 (क) निर्माण सामग्रियों, कंकीट श्रीक्षोगिकी तथा सरंचकारकक श्रीक्ष-यांकिकी से सम्बद्ध विवयों पर केन्द्रीय तथा राज्ये करकारों एवं उनकी एजेंसियों को परामण वेना।
 - (स्र) समिति को परामर्श देने हेतु हैमसस्याच्यो पर विचार करने के लिए विशेष कार्यवन विशेषकों का पैसन निस्कत करना।
- 2.2 (क) राष्ट्रीय तथा प्रस्तर्शब्दीय संगठनों से सम्बद्ध सूचनाओं के एकजी-करण प्रीर उनके प्रचार-प्रभार के माध्यम से मिमीण सामिष्ठयों कंकीट प्रौद्योगिकी एवं सरचनात्मक प्रक्रियोशिकी के विधिक्त केकों मे देश में हुए नधीनतम विकास को तैयार करना झौर उसे समय-समय पर ग्रद्यातन करना ।
 - (क) निर्माण गामधियो, कंकीट प्रौद्योगिकी तथा गंरमगाश्मक अभि-यात्रिकी के विकास का ऐतिहासिक मूल्यांकन पर अध्ययन करना और इस क्षेत्र में अनुमंधान हेतु परिप्रेथ्य आयोजना ग्रारम्भ करना ।
 - (ग) जर्नेत्र, ग्रमुसधान समाचार/डाइजेस्ट के प्रकाशन के माध्यम से निर्माण सामग्रियो एय कैकीट प्रीद्योगिकी से संबंधित सूत्रना का प्रचार-प्रसार करना ।
- 2.3 (क) निर्माण सामग्री, कंकीट प्रौधोधिकी तथा गरवनात्मक श्रीभयांव त्रिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टना के केल्ब्रों की मान्यना श्रनुशंसित करना ग्रीर उनके सिए केल्ब्रीय स्तर पर धनशकि उपलब्ध कराने की श्रनुशंसा करना ।
 - (ख) धनुसंज्ञान संस्थाद्यों के प्रथसंरचनाध्यक विकास हेतु धनराशिको व्यवस्था की धनुशंसा करना ।
 - (ग) विभिन्न संस्थानों के अनुमधान कार्यक्रमों में परस्पर व्याप्ति से सबसे के लिए प्रशासकारी समान्य बनाए रखना।
 - (घ) मानव संसाधत विकास के कार्यत्रमों को बढ़ावा देशा जिससे कि धनुसंधान स्टाफ का विशिष्टीकरण हो, उत्कृष्ट ग्रनुसंधान कर्मियो के उत्साहवर्षन की सिफारिश करना ।
- 2.4 (क) निर्माण सामयो, कंकीट प्रौद्योगिकी तथा मंद्रचनात्मक धिक्षयां-विकी दे क्षेत्र में वैसे बिन्धुकों को प्रभिक्षात करना जिन पर तत्काल ध्याम विए जाने की ग्रावण्यकता है प्रचवा जिनमें वेश में ग्रानु-संधान गतिविधियों को ग्रान्तर्राष्ट्रीय स्तर के बरावर लाने के लिए नये तरीके शुक्र किए जाने हैं।
 - (क) मौलक एवं प्रमुप्रयुक्त प्रमुक्षान, कार्रवाई प्रमुखंकान तथा निर्माण सामग्री, ककीट प्रौद्योगिकी एवं संरचनात्मक प्रभियाक्तिकी में प्रमुखंक्षान से जुड़े ग्रन्य केंद्रों में देश के संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले प्रमुखंक्षान के कार्यकर्मों की [अनराशि व्यवस्थातियार करना, समन्वयं करना तथा मिकारिश करना।
 - (ग) समिति द्वारा श्रशिकान चित्रवृद्धि । अधिमक्ता के क्षेत्रों में चंतु-संघान अध्ययन एवं विकासारमक गतिविधिया हाथ में लेने हेतु

राष्ट्रीय संस्थानों को प्रोत्साहित करना। जहां श्रावस्यक हो वहां किसी विशेष विषय में श्रनुसधान∮विकास करने हेतु किसी संस्था को समिति स्वय नामित कर सकनी है।

- (ष) निर्माण सामग्री, ककीट प्रौद्योगिकी एवं संरक्षनात्मक भ्रामियां क्रिकी में प्रनुसंधान एवं विकास सिविधियां धारण्य करते, शान का प्रवार-प्रसार करते, जन-जागहकता कार्यक्रम में भाग लेने, भ्रावि में स्वयंमेकी पेणेयर निकासों. गैर-त्यवसायिक गैं सरकारी संगठनों को प्रौत्साहित करना!
- (ङ) अन्य राष्ट्रीय समितियों/बोईं मंग्रंधित भारत मरकार राज्य के मजालयों, सी ज्यान आई आई आई आई आई विवास के प्रयोगणालाओं, आई आई आई विवास हो हो हजीनियरिय का के की नथा पोलिटेनिक संस्थाओं, विवयक विशालयों तथा प्रन्य जैक्षिक गंस्थानों के साथ प्रभावकारी सहयोग सनाय रखना ।
- (चं) देशी उद्योग को ऋण के माध्यम से निर्माण सामग्री, लंकीट प्रौद्योगिकी तथा सरचनात्मक प्रक्षियांत्रिकी में प्रौद्योगिकी विकास प्रारम्भ करने के तिए प्रोत्माहित करना।
- (छ) निर्माण सामग्री, ककीट प्रौद्योगिकी एवं सरचनात्मक श्रिभयांत्रिकी के क्षेत्र में अनुसंधान स्कीमों पर निष्पादन संस्थाग्रों द्वारा की गई प्रगति का प्रबंधन करना।
- 2.5 (क) निर्माण मामग्नी, ककीट प्रौद्योगिकी एव सरतनात्मक प्रभियांत्रिकी ये संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भारत की प्रभावकारी भागीवारी को बढ़ाया देना तथा समन्त्रय करना, तथा जहां अपेक्षित हो बहा ऐमे अन्तर्राष्ट्रीय निकायों के लिए राष्ट्रीय मिनित के सप में कार्य करना।
 - (ख) निर्माण सामग्री . अश्रीट प्रगौद्योगिश्वी एवं सरअसात्मक अधि-यांत्रिकी के क्षेत्र में शिक्षा एवं प्रशिक्षण नथ। मानवशनिन विकास के कार्यश्रमों को सदावा देना ।
 - (ग) निर्माण सामग्री अंश्रीट प्रीक्षोगिकी एय सरचनारमक श्रीमतांत्रिकी के क्षेत्र में गोष्टियों/सम्मेलन/कार्यशालाग् श्रायोजित करना, जन जागरूकता नार्यक्षम को सहायता देना तथा अनुमधान एयं विकास समीक्षा सर्जों को श्रायोजित करना ।

3. वैठक

समिति की बठक श्रावस्थकतानुसार होगी, सथापि वर्ष में कम से कम एक बैठक मावस्य होगी ।

4. उष-समितियां

समिति श्रिक्षकतम पाच उप-सीमितिया नियुक्त कर सकती है, जिनमें से प्रस्थेक की सबस्य संख्या श्रिकतन पांच हो सकती है। उप-सिमिति की सबस्थता भारतीय राष्ट्रीय सिमिति के सबस्यो तक सीमित होगी।

सचिवालय

भारतीय राष्ट्रीय निर्माण सामग्री एवं सरचना समिति तथा इसकी उप-समितियों का सचिवालय निवेशक, केन्द्रीय मृदा एवं सामग्री मनु-संधान मासा, मई विल्ली के प्रणासमिक नियंत्रण के ग्रधीन होगा।

त, व्यय

(क) सरकारी सथस्यों को दिए जान वाले याला-व्यय उन्हीं स्त्रोतों से पूरा किया जाएगा जहां से वे प्रपने वेतन लेते हैं और गैर सरकारी सबस्यों के मामले में यह व्यय भारतीय राष्ट्रीय निर्माण सामग्री एवं संरचना समिति के फंड अनुदान किया जाएगा । (क) सिष्पालय की गतिविधियों तथा उपर्युक्त 6 (क) में उत्शिक्षिप मर्दी से संबंधित ध्यम भेतुसंघान एवं विकास के योजना प्रावधानों के नामे काला जाएगा ।

आदेग

भादेण दिया जाला है कि उपर्युक्त सकत्र भारत्यत के राजपक्ष में प्रकाणि। किया जाए।

> अनूप कुमार संस्था अवर संविध

सं० के ० ज ० घा०/10/9/93-धार० एण्ड ही०/58—भारतीय राष्ट्रीय सिंचाई एवं जल निकास समिति के गठन से संबंधित पूर्व संकल्प/धादेख सं० 24/3/89-स्था० दो विश्वाक जून, 1990 में धांशिक मंशोधन करते हुए, भारत सरकार निम्नलिखिस संघटन, कार्यों तथा सम्बद्ध प्रावधानों के साथ उक्त समिति का पूनर्गठन करती है :---

1. संरचना

भव्यक्ष

(क) घष्ट्यक्ष केन्द्रीय जल भागोग नई दिल्ली

सबस्य

- (क) सदस्य (जन्न योजना) केन्द्रीय जल भायोग नई दिल्ली
- (ग) सलाहकार (बाई॰एण्ड योजमा झायोग सी॰ ए॰डी॰) नई दिल्ली
- (ग) भहानिदेशक या उन हे भारतीय कृषि समुसंधान द्वारा नामांकित औ परिषद, नई दिल्ली वैज्ञानिक "एक" के पद से नीचे का नहीं
- (क) निदेशक जल प्रोद्यौगिक केन्द्र भारतीय कृषि घनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
- (च) निदेशक जल धनुसंधान विकास प्रोद्योगिक केन्द्र, कड़की विध्वशिद्यालय चड़की ।
- (छ) प्रमुख अभियंता तीन राज्यों से कमावर्तन से या प्राधार पर
- (झ) मुक्य भिर्थता (जल संसाधन मंत्रालय द्वारा 3 वर्ष की भवधि के लिए नियुक्त किया जाएगा)
- (ज) निदेशक इंजीनियरिंग छः राज्यों से कमावर्तन से सिंचाई बनुसंधान घाघार पर
- (ज) प्रयोगणाला/संस्थान (जल संसाधन मंत्रालय द्वारा तीन वर्ष की भवधि के लिए नियुक्त किया जाएया)
- (त) सिचाई तया शल निकास क्षेत्र में कार्यरत तीन प्रसिद्ध शिक्षाविद
- से (जल संसाधन मंत्रालय द्वारा तीन वर्षों की सवधि के लिए नामित (व) किए जाएँगे)

- (घ) अध्यक्ष भारतीय जल लेसावन गोसावदी
- (न) निदेशात गुर्ने शिकास एवं विशिष्ट विश्लेषण (के०ज-ध्या०) त्या श्रमुख विश्य वस्तु प्रभाग

सदस्य-सचिव

(प) मुख्य ललाहकार ेपकास, प्रभिक्ता पर्द दिल्ली

- 2. समिति के कार्य निम्नायत होंगे :
- 2.1 (क) सिंव। १ एवं जल िकास शिमगितिकी से गम्बद्ध विवयों पर केन्द्रीय पथा राज्य सरकारों एवं उनकी एजेंसियों की पर। गर्व देना।
 - (ख) समिनि की परामर्श देने हेगु समस्याओं पर त्रिचार करने के शिष् विशेष कार्यवस्त्रिकी का पैगल सियुक्त करना ।
- 2.2 (क) राष्ट्रिय सथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से सम्बद्ध सूचनायों के एकसीकरण और एनके प्रचार-प्रसार के माध्यम से मिचाई एवं जल निकास अभिगीतिकी के विभिन्न क्षेत्रों में देश में हुँए नवीनतम विकास को तैयार करना और उसे समय-समय पर अव्यक्त करमा।
 - (ख) सिचाई एवं जल निकान ध्रमियांत्रिकी के विकास के ऐतिहासिक मूल्यांकन पर अध्ययन करना और इस क्षेत्र में धनुसंधान हेन् परिषेक्ष धायोजन धारम्य करना ।
 - (ग) जर्मेल, प्रमुखान समाचार/बाध्जेस्ट के प्रकाशन के माध्यम सिवाई एवं जल निकास प्रौधोगिकी से संबंधित सूचना का प्रचार-प्रसार करना।
- 2.3 (क) सिंचाई एवं जल निकास मिम्पालिको के विभिन्न क्षेत्रों में उत्हब्दता के केन्द्रों की मान्यता अनुशसित करना भीर उनके लिए केन्द्रोय स्तर पर धनराशि उपलब्ध करने की अनुशंसा करना
 - (ख) भनुमंद्यान संस्थाभों के भवसरचनात्मक विकास हेतु अंगराणि की व्ययस्था की भनुशसा करना ।
 - (ग) विभिन्न सस्यामी के भनुपंचान कार्यकर्मों में परस्पर व्याप्ति से बचने के लिए प्रभावकारी समन्वय बनाए रखना ।
 - (भ) मानव संसाधन विकास के कार्यक्रमों को बढ़ावा देना जिससे मनुसंधान स्टाफ का विशिष्टीकरण तो तथा उल्ह्रष्ट मनुसंधान कर्मियों के उत्साहबर्धन की सिफारिश करना।
- 2.4 (क) सिंचाई एवं जल निकास भिष्यांतिकों के सेंत में बैसे बिन्दुओं को अपिकास करना जिल पर नत्काल ध्यान दिए जाने आयक्ष्य करता है अपया जिनमें देश में अनुसंधान गतिविधियों को भन्तर्राष्ट्रीय स्तर के बराबर सामे के लिए नये तरीके मुख् किए जाने हैं।
 - (ख) मौतिक एतं अनुभंपुक्त अनुसंधान, कार्रवाई अनुसंधान तथा सिंधाई एक जल निकास अभियांति तो में अनुसंधान से जुड़े अन्य क्षेत्रों से देश को संस्थाओं द्वारा किए जाने काले अनुसंधान के कार्यक्रमों की धनराशि व्यवस्था तैयार करना, समन्वय करना तथा सिंफारिश करना ।
 - (ग) सिनिति द्वारा स्विभाति प्रिमृत्दि/पारिनकता के क्षत्रों में सनु-लग्नान श्रव्ययन एवं जिकासात्मकगितिविधयां हाथों में लेने हेतु

राष्ट्रीय संस्थानों को प्रोत्माहित करना । जहां घावण्यक हो बहां किसी विशेष विषय में घनुसंधान/विकास करने हेंनु किसी संस्था को समिति स्वयं नामित कर सकती है ।

- (क) सिंचाई एवं जल निकास ग्राभियांत्रिकी में ग्रनुसंधान एवं विकास गितिविधियां ग्रारम्भ करने, ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने, जन-जागरकता कार्यक्रम में भाग लेने, ग्रादि में स्वप्सेधी निकायों, गैर-व्यावसायिक गैर-सरकारी शंगठनों को प्रोत्हसाहित करना।
- (कः) धन्य राष्ट्रीय समितियों/बोडी, संबंधित भारत सरकार/राज्य के मंत्रालयों, सी० एस० प्राई० प्रार० के प्रयोगशालाधों, भाई० भाई० टी०, इंजीतियरिंग कालेजों तथा पोलिटेकिनक संस्थाओं विश्वविद्यालयों तथा भ्रन्य शैक्षिक संस्थाओं के साथ प्रभावकारी सहयोग बनाये रखना।
- (च) वेशी उद्योग को ऋण के माध्यम से सिचाई एवं जल निकास स्रीयांत्रिकी में प्रोद्योगिकी विकास प्रारम्भ करने के लिए प्रोत्साहित करना ।
- (छ) सिंचाई एव जल निहास अभियातिको के क्षेत्र में अनुसंधान स्कीमों पर निष्पादन संस्थाओं द्वारा की गई प्रगति का प्रबोधन करना ।
- 2.5 (क) सिंचाई एवं जल निकास प्रभियांतिकी से संबंधित घन्तर्गष्ट्रीय कार्यक्रमों में भारत की प्रभावकारी भागीवारी को बढ़ावा देना तथा समन्वय करना, तथा जहां घ्रयेक्षित हो वहां ऐसे घन्तर्राष्ट्रीय निकायों के लिए राष्ट्रीय समिति के रूप में कार्य करना।
 - (खा) सिचाई एवं जल निकास भ्राभियाजिकी के क्षेत्र में शिक्षा एवं प्रशिक्षण तथा मानवशक्ति विकास के कायकमों को बढ़ाया वेना।
 - (ग) सिंबाई एवं जल निकास ध्राभयोतिकी के क्षेत्र में गोष्टियों/ सम्मेलन/कार्यभालाएं आयोजित करमा, जन जागरूकता कार्य-कमों को सहायता देना संया धनुसंधान एवं विकास समीक्षा सत्रों को धायोजित करना ।

MINISTRY OF WATER RESOURCES

New Delhi, the 17th January 1994

Subject: Reconstitution of Indian National Committee on Hydraulic Research. (INCH).

No. CWC/10/9/93-R&D/50.—In partial modification of earlier resolution/order No. 21/3/89-E.H(A) dated 29 Oct. 1990 relating to const tu.ion of Indian National Committee on Hydraulic Research (INCH.), Government of India is pleased to reconstitute the committee with the following composition, functions and related provisions:

1. Composition

Chairman

(i) Director, Central Water and Power Research Station, Punc.

Members

- (ii) Chief Engr. of D&R
 Wing to be rominated
 by Member (D&R),
 Central Waver Commission,
 New Delhi.
- (iii) Chief Engr. of H.E.
 Wing to be nominated
 by Member (H.E.),
 Cen ral Electricity
 Authority,
 New Delhi.

3. बैठक

समिति की बैठक भावक्यकतानुसार होगी, तथापि वर्ष में कम से कम एक बैठक अवज्य होगी ।

4. उप-समितिया

मिति प्रधिकतम पांच उप-सितियां नियुक्त कर सकती है, जिनमें से प्रत्येक की सदस्य संख्या प्रधिकतनम पांच हो सकती है उप-सिति की मदस्यता भारतीय राष्ट्रीय सिनित के सदस्यों सक सीमित कीगी ।

5. सचिवालय

भारतीय राष्ट्रीय सिंचाई एवं जल निकास समिति सथा इसकी उप-समितियों का सचिवालय प्रबन्ध निदेशक, वैपकोस, नई दिल्ली के प्रशासनिक नियलण के प्रधीन होगा ।

6. व्यय

- (क) सरकारी सदस्यों को विए जाने वाले याक्षा भत्ते दैनिक भन्ते संबंधी व्यय उन्ही स्रोतों से पूरा किया जाएगा अहां से वे धपने वेतन लेते हैं तथा गैर सरकारी सदस्यों के मामले में यह व्यय भारतीय राष्ट्रीय सिंचाई एवं जल निकास समिति के फंड/ धनुवान से किया जाएगा ।
- (ख) सिचवालय की गतिविधियों तथा उपर्युक्त 6 (क) में उल्लिखित मदों से संबंधित व्यय प्रनुसंघान एवं विकास के योजना प्रावधानों के नामें ढाला जाएगा ।

आवेश

भावेश दिया जाता है कि उपर्यृक्त संकल्य भारत के राजपत में अकाशित किया जाए ।

> हु० अपठतीय अवर सचिव

- (iv) Chief Engineer
 to be nominated by Chairman,
 Central Pollution Control Board,
 Parivesh Bhavan,
 CBD cum Office complex, East Arjun Ngr. Shadhara, Delhi-110032.
- (v) Vice Chairman, Ganga Flood Control, Commission, Sinchai, Bhawan, Patna-800015.
- (vi) A representative of Indian Pump Manufacturer's Association, Kakad Chambers, Worli, Bombay-400018.
- (vii) Engineer-in-Chief Three States on Rotational Basis.
- (vili) or
- (ix) Chief Engineer
- (To be appointed for a term of 3 years by MOWR)
- (x) Directors of Hydraulic
- (xi) Research
- (xii) Laboratories/Institutes.
 Andhra Pradesh, Assam, Bihar,
 Gujarat, Kerala, Karnataka, M.P.,
 Maharashtra, Orissa, Punjab, Tamil Nadu,
 Uttar Pradesh, West Bengal.

- (xiii) Three eminent academicians working in the
 - (xiv) area of Hydraulic Research from among
- (xiv) area of Hydraulic Research from among Associations dealing with Hyderaulics.
- (To be appointed for a term of 3 years by MOWR)
- (xvi) President/Vice-President Indian Society for Hydraulics.
- (xvii) Director (R&D & SA),
 Central Water Commission and
 Head Subject
 Matter Division.

Member-Secretary

- (xvili) Chief Research Officer, Central Water and Power Research Station, Pune.
- 2. Functions of the Committee shall be as Follows:
- 2.1 (i) To give advice to Central and State Governments and their agencies on matters related to Hydraulic Engineering.
- (ii) To appoint special task force/expert panels to consider special problems to advise the committee.
- 2.2 (i) To prepare and periodically update the state of art in the Country in different branches of Hydraulic Engineering by collecting relevant information from national and international organizations and disseminating the same.
- (ii) To undertake s'udies on historical appreciation of Development of Hydraulic Engineering and introduce perspec:ive planning for research in the field.
- (iii) To disseminate information related to Hydraulic Engineering by way of publishing journals, research news/digests.
- 2.3 (i) To recommend recognition of Centres of Excellence in different branches of Hydraulic Engineering and recommend central funding thereof.
- (ii) To recommend funding for the Infrastructural Development of Hydraulic Research Institutions.
- (iii) To maintain effective co-ordination to avoid overlaps in the Research programmes of the different Institutions.
- (iv) To promote programs for human resources development leading to specialization of Research Staff and recommend encouragement for the outstanding research personnel.
- 2.4 (i) To identify areas in the field of Hydraulic Engineering which need immediate attention or in which new methods are to be introduced for bringing the level of research activities in the country to international standards.
- (ii) To prepare, co-ordinate and recommend funding of 1esearch programs to be taken by the institutions in the country on basic & applied research, action research, and other areas related to research in Hydraulic Engineering.
- (iii) To encourage the national institutions to take up research studies and developmental activities in the fields which have been identified by the committee as thrust/priority areas; where necessary, the committee may itself nominate the institution for undertaking research/development in a specified subject.
- (iv) To encourage voluntary professional bodies, Non-Commercial NGO's to take up R&D activities, dissemination of knowledge, participation in mass awareness program, etc. in Hydraulic Engineering.
- (v) To maintain effective cooperation with other National Committees/Boards, related GOI/State Ministries, CSIR Labs, IIT's, Engineering Colleges and Polytechnics, Universities & other Academic Institutions:

- (vi) To encourage indigenous industry through loans to take up technological development in Hydraulic Engineering.
- (vii) To monitor the progress made by the executing institutions on research schemes in the field of Hydraulic Engineering.
- 2.5 (i) To promote and coordinate effective participation of India in the international programs related to Hydraulic Engineering and to act as national committee for such international bodies where required.
- (ii) To promote Educational and Training and Manpower Development programs in the field of Hydraulic Engineering.
- (iii) To arrange and conduct seminars/conferences/work-shops, to support mass awareness programs, and to arrange R&D review sessions in the Hydraulic Engineering.

3. Meeting

The Committee will meet as and when necessary; however, there shall be at least one meeting in a year.

4. Sub-Committees

The Committee may appoint a maximum of five sub-committees, each of which may have maximum five members. The membership of the sub-committee will be restricted to the members of the Ind an National Committee.

5. Secretariat

The Secretariat of INCH and it's sub-committees will be under the administrative control of Director, CWPRS, Pune.

6. Expenditure:

- (a) Expenditure on account of TA/DA to official members will be met from the sources from which they draw their salaries and that to non-official members will be met from the funds/grants of the Indian National Committee on Hydraulic Research
- (b) Expenditure on account of activities of secretariat and those mentioned in 6(a) above, shall be chargeable to R&D Plan Provisions.

Ordered that the above resolution may be published in the Gazette of India.

A K. BARUA, Under Secy.

No. CWC/10/9/93-R&D/52.—In partial modification of earlier resolution/order No. 11/8/89-E.II. dated 24th April, 1989 relating to constitution of Indian National Committee on Hydrology (INCOH), Government of India is pleased to reconstitute the committee with the following composition, functions and related provisions.

1. Composition

Chairman

(i) Chairman, Central Water Commission New Delhi.

Ex-Member

- (ii) Director, Na'ional Institute of Hydrology, Jal Vigyan, Bhawan, Roorkee-247667. Members
- (iii) Dy. Director General to be nominated by Director General, Geological Survey of India, 27, J. L. Nehru Marg, Calcutta-700016,

- (iv) Chairman, Central Cround Water Board, Jamnagar House, Mansingh, Road, New Delhi-110001.
- (v) Dy. Director, General to be nominated by Director General, India Meteorological Deptt, Mausam Ehawan, Lodhi Road, New Delhi-110003.
- (vi) Scientist 'E', Nutional Remote Sensing Agency, Falanagar, Hyderabad.
- (vii) to (ix) Representative of three Central Organisations not below the rank of Chief Engineer, related to the field of Hydrology.
 - (To be appointed for a term of three years by MOWR)
- (x) to (xv) Representative of Six States not below the rank of Director.
 - (To be appointed for a term of three years by MOWR)
- (xvi) to (xviii) Three eminent academicians working in the field of hydrology from among the members of National/International Associations dealing with Hydrology.
 - (To be appointed for a term of three years by MOWR)
- (xix) President, Indian Association of Hydrologists, Roorkee
- (xx) Director,
 R&D & S4,
 Central Water Commission and
 Hord Subject Matter
 Division
- (xxi) Scientist "E", National Institute of Hydrology, Roorkee.

Member Secretary

- 2. Functions of the Committee shall be as Follows:
- 2.1 (i) To give advice to Central and State Governments and their agencies on matters related to Hydrology.
- (ii) To appoint special task force expert panels to consider special problems to advise the commit ee.
- 2.2 (i) To prepare and periodically update the state of art in the Country in liffere t branches of Hydrology by collecting relevant information from national and international organisations and disseminating the same
- (ii) To undertake studies on historical appreciation of Development of Evdrology and introduce perspective planning for research in the field.
- (iii) To disseminate information related to Hydrology by way of publishing journ is, research news/d gests.
- 2.3 (i) To recommend recognition of Centres of Excellence in different branches of Hydrology and recommend central funding thereof.
- (ii) To recommend funding for the Infrastructural Development of Hydrological Research Institutions.
- (iii) To maintain effective co-ordination to avoid overlaps in the Research programs of the different Institutions.
- (iv) To promote programs for human resources development leading to speculation of Research staff and recommend encouragement for the outstanding research personnel.

- 2.4 (i) To identify areas in the field of Hydrology which need immediate attention or in which new methods are to be introduced for bringing the level of research activities in the country to international standards,
- (ii) To prepare, co-ordinate and recommend funding research programs to be taken by the institutions in the country on basic & applied research, action research, and other areas related to research in Hydrology.
- (iii) To encourage the national institutions to take up research studies and developmental activities in the fields which have been identified by the committee as thrust/priority areas; where necessary, the committee may itself nominate the institution for undertaking research/development in a specified subject.
- (iv) To encourage voluntary professional bodies, Non-Commercial NGO's to take up R&D activities, dissemination of knowledge, participation in mass awareness program, etc. in Hydrology.
- (v) To main ain effective cooperation with other National Committees/Boards, related GOI/Sinte Ministries, CSIR Labs, IIT's, Engineering Colleges and Polytechnics, Universities & other Academic Institutions.
- (vi) To encourage indigenous industry through loans to take up technological development in Hydrology.
- (vii) To monitor the progress made by the executing institutions on research schemes in the field of Hydrology.
- 2.5 (i) To promote and coordinate effective participation of India in the international programs related to Hydrology and to act as national committee for such international bodies where required.
- (ii) To promote Educational and Training and Manpower Development programs in the field of Hydrology.
- (iii) To arrange and conduct seminars/conferences/workshops, to support mass awareness programs, and to arrange R&D review sessions in the Hydrology.

3. Meeting

The Committee will meet as and when necessary; however, there shall be at least one meeting in a year.

4. Sub-Committees

The Committee may appoint a maximum of five sub-committees, each of which may have maximum of five members. The membership of the sub-committee will be restricted to the members of the Indian national Committee.

Secretariat

The Secretariat of INCOH and it's sub-committees will be under the administrative control of Director, NIH, Roorkee.

6. Expenditure:

- (a) Expenditure on account of TA/DA to official members will be met from the sources from which they draw their salaries and that to non-official members will be met from the funds/grants of the Indian National Committee on Hydrology.
- (b) Expenditure on account of activities of secretariat and those mentioned in 6(a) above, shall be chargeable to R&D Plan Provisions.

Ordered that the above resolution may be published in the Gazette of India.

A. K. BARUA, Under Suny.

No. CWC/10/9/93-R&D/54.—In partial modification of earlier resolution/order No. 24/3/89-ΕΠ(Β) dated 31-5-91 relating to the constitution of Indian National Committee on Rock Mechanics and Tunneling Technology (INCRMTT), Government of India is pleased to reconstitute the Committee with the following composition, functions & related provisions.

1. Composition:

Chairman

(i) Director, Central Soil and Materials Research Station, New Delhi,

Members

- (ii) A Chief Engineer of D&R Wing to be nominated by Member (D&R), Central Water Commission, New Delhi.
- (iii) Director (Engg. Geology), Geological Survey of India, Calcutta.
- (iv) Scientist "E"—National Geo-physical Research Institute, Hyderabad,
- (v) Director, National Institute of Rock Mechanics, Kolar.
- (vi) A nominee of Director, CMRS not below the rank of Scientist "E". Central Mining Research Station, Dhanbad.
- (vii) Representatives of three Hydro-Electric
- to Corporations not below the rank of Chief
- (ix) Engineer on Rotational Basis.(To be appointed for a term of three years by MOWR)
- (x) Directors of State Research to Institutions or Laboratories.
- (xv) Six States on Rotational Basis.
- (To be appointed for a term of 3 years by MOWR)
- (xvi) to (xviii) Three eminent academicians working in the area of Rock Mechanics & Tunneling Technology.
 - (To be appointed for a term of 3 years by MOWR)
- (xix) President
 Indian Society for Rock
 Mechanics & Tunneling Technology.
- (xx) Director,

 R & D & SA,

 Central Water Commission and
 Head SMD.

Member-Secretary

- (xxi) Chief Research Officer, Central Soll and Materials Research Station, New Delhi.
- 2. Functions of the Committee shall be as Follows:
- 2.1 (i) To give advice to Central and State Governments and their agencies on matters related to Hydrology.
- (ii) To appoint special task force/expert panels to consider special problems to advise the committee.
- 2.2 (i) To prepare and periodically update the state of art in the Country in different branches of Hydrology by collecting relevant information from national and international organisations and discominating the same.

- (ii) To undertake studies on historical appreciation of Development of Hydrology and introduce perspective planning for research in the field,
- (iii) To disseminate information related to Hydrology by way of publishing journals, research news/digests.
- 2.3 (i) To recommend recognition of Centres of Excellence in different branches of Hydrology and recommend central funding thereof.
- (ii) To recommend funding for the Infrastructural Development of Hydrological Research Institutions.
- (iii) To maintain effective co-ordination to avoid overlaps in the Research programs of the different Institutions.
- (iv) To promote programs for human resources development leading to specialisation of Research staff and recommend encouragement for the outstanding research personnel.
- 2.4 (i) To identify areas in the field of Rock Mechanics and Tunneling Technology which need immediate attention or in which new methods are to be introduced for bringing the level of research activities in the country to international standards.
- (ii) To prepare, co-ordinate and recommend funding of research programs to be taken by the institutions in the country on basic & applied research, action research, and other areas related to research in Rock Mechanics and Tunneling Technology.
- (iii) To encourage the national institutions to take up research studies and developmental activities in the fields which have been identified by the committee as thrust/priority areas; where necessary, the committee may itself nominate the institution for undertaking research/development in a specified subject.
- (iv) To encourage voluntary professional bodies, Non-Commercial NGO's to take up R&D activities, dissemination of knowledge, participation in mass awareness programs, etc. in Rock Mechanics and Tunneling Technology.
- (v) To maintain effective cooperation with other National Committees/Boards, related GOI/State Ministries, CSIR Labs, IIT's, Engineering Colleges and Polytechnics, Universities & other Academic Institutions.
- (vi) To encourage indigenous industry through loans to take up technological development in Hydrology.
- (vii) To monitor the progress made by the executing institutions on research schemes in the field of Hydrology.
- 2.5 (i) To promote and coordinate effective participation of India in the international programs related to Rock Mechanics and Tunneling Technology and to act as national committee for such international bedies where required.
- (ii) To promote Educational and Training and Manpower Development programs in the field of Rock Mechanics and Tunneling Technology.
- (iii) To arrange and conduct seminars/conferences/workshops, to support mass awareness programs, and to arrange R&D review sessions in the Rock Mechanics and Tunneling Technology.

3. Meeting

The Committee will meet as and when necessary; however, there shall be at least one meeting in a year,

4. Sub-Committees

The Committee may appoint a maximum of five sub-committees, each of which may have maximum of five members. The membership of the sub-committee will be restricted to the members of the Indian national Committee.

5. Secretariat

The Secretariat of INCOH and its sub-committees w.f. be under the administrative control of Director N.I.H. Roorkee.

6. Expenditure:

- (a) Expenditure on account of TA/DA to official members will be met from the sources from which they draw their salaries and that to non-official members will be met from the funds/grants of the Indian National Committee on Rock Mechanics and Tunneling Technology.
- (b) Expenditure on account of activities of secretariat and those mentioned in 6(a) above, shall be chargeable to R&D Plan Provisions.

Ordered that the above resolution may be published in the Gazette of India.

A. K. BARUA, Under Secy.

No. CWC/10/9/93-R&D/56.—In partial modification of earlier resolution/order No. 22/1/92-E.II dated 5th August 1992 relating to constitution of Indian National Committees on Construction Materials and Structures (INCCMS) Government of India is pleased to reconstitute the committee with the following composition, functions and related provisions.

1. Composition.

Chairman

 Director, Central Soil and Materials Research Station, New Delhi.

Members

- (ii) Chief Engineer
 of D&R Wing
 to be nominated by Member (D&R),
 Central Water Commission,
 New Delhi.
- (iii) Chief Engineer to be nominated by Executive Director, National Hydro., Electric Corpn., New Delhi.
- (iv) Director General, National Council for Cement and Building Materials, Ballabhgarh, Haryana.
- (v) Director, Structural Engineering Research Centre, Ghaziabad.
- (vi) Chief Engineer, Central Public Works Deptt., New Delhi.
- (vii) Engineer-in-Chief
- to or
- (ix) Chief Engineer.
 Three States on
 Rotational basis.
- (x) Directors of State eo Research Institutes/
- (xv) Laboratories, Six States, on Rotational basis.
- (xv) Laboratories, to field of construction materials/concrete
- (xviii) technology/structures.

(Sl. No. vii to xviii to be appointed for a term of three years by MOWR)

- (xix) President/Vice-President, Indian Society for Construction Materials and Structures.
 - (xx) Director (R&D&SA), Central Water Commission and Head Subject Matter Division.

Member-Secv.

- (xxi) Chief Research Officer, CSMRS, New Delhi.
- 2. Functions of the Committee shall be as Follows:
- 2.1 (i) To give advice to Central and State Governments and their agencies on matters related to Construction materials, Concrete Technology and Structural Engineering.
- (ii) To appoint special task force/expert panels to consider special problems to advice the committee.
- 2.2 (i) To prepare and periodically update the state of art in the Country in different branches of Construction Materials. Concrete Technology and Structural Engineering by collecting relevant information from national and international organizations and disseminating the same.
- (ii) To undertake studies on historical appreciation of Development of Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering and introduce perspective planning for research in the field.
- (iii) To disseminate information related to Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering by way of publishing journals, research news/digests.
- 2.3 (i) To recommend recognition of Centres of Excellence in different branches of Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering and recommend central funding thereof.
- (ii) To recommend funding for the Infrastructural Development of Research Institutions,
- (iii) To maintain effective co-ordination to avoid overlaps in the Research programs of the different Institutions.
- (iv) To promote programs for human resources development leading to specialization of Research Staff and recommend encouragement for the outstanding research personnel.
- 2.4 (i) To identify areas in the field of Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering which need immediate attention or in which new methods are to be introduced for bringing the level of research activities in the country to international standards.
- (ii) To prepare, co-ordinate and recommend funding of research programs to be taken by the institutions in the country on basic & applied research, action research, and other areas related to research in Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering.
- (iii) To encourage the national institutions to take up research studies and developmental activities in the fields which have been identified by the committee as thrust/priority areas; where necessary, the committee may itself nominate the institution for undertaking research/development in a specified subject.
- (iv) To encourage voluntary professional bodies, Non-Commercial NGO's to take up R&D activities, dissemination of knowledge, participation in mass awareness programs, etc. in Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering.
- (v) To maintain effective cooperation with other National Committees/Boards, related GOI/State Ministries, CSIR Labs, IIT's Engineering Colleges and Polytechnics, Universities & other Academic Institutions.
- (vi) To encourage indigenous industry through loans to take up technological development in Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering.
- (vii) To monitor the progress made by the executing institutions on research schemes in the field of Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering.

- 2.5 (i) To promote and coordinate effective participation of India in the international programs related to Construction Materials. Concrete Technology and Structural Engineering and to act as national committee for such international bodies where required.
- (ii) To promote Educational and Training and Manpower Development programs in the field of Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering.
- (iii) To arrange and conduct seminars/conferences/work-shops, to support mass awareness programs, and to arrange R&D review sessions in the Construction Materials, Concrete Technology and Structural Engineering.

3. Meeting:

The Committee will meet as and when necessary, however, there shall be at least one meeting in a year.

4 Sub-Committees:

The Committee may appoint a maximum of five subcommittees, each of which may have maximum of five members. The membership of the sub-committee will be restricted to the members of the Indian National Committee.

5. Secretariat :

The Secretariat of INCCMS and its sub-committees will be under the administrative control of Director, CSMRS, New Delhi.

6. Expenditure:

- (a) Expenditure on account of TA/DA to official members will be met from the sources from which they draw their salaries and that to non-official members will be met from the funds/grants of the Indian National Committee on Construction Materials and Structures,
- (b) Expenditure on account of activities of secretariat and those mentioned in 6(a) above, shall be chargeable to R&D Plan Provisions.

Ordered that the above resolution may be published in the Gazette of India.

A. K. BARUA, Under Secy.

No. CWC/10/9/93-R&D/58.—In partial modification of earlier resolut on/order No. 24/3/89-Estt.II dated June, 1990 relating to constitution of Indian National Committee on Irrigation & Drainage (INCID). Government of India is pleased to reconstitute the committee with the following composition, functions and other related provisions.

Composition :

Chairman

 Chairman, Central Water Commission, New Delhi.

Members

- (ii) Member (WP), Central Water Commission, New Delhi.
- (iii) Advisor (I&CAD), Planning Commission, New Delhi.
- (iv) Director General or his nominee, not below the rank of Scientist 'F', Indian Council of Agricultural Research Institute, New Delhi.

- (v) Director, Wa'er Technology Centre Indian Agricultural Research Institute, New Delhi.
- (vi) Director, WRDTC, University of Rootkee, Roorkee.
- (vii) Engineer-in-Chief
 - to or
- (ix) Chief Engineer,
 Three States on Rotational Basis.

 (To be appointed for a term of 3 years)
- (x) Directors of State,
- to Research
- (xv) Institutions or Laboratories/
 Six States on Rotational basis.
 (To be appointed for a term of 3 years)
- (xvi) Three eminent academicians working in the area of Irrigation and Drainage.
 (To be appointed for a term of 3 years)
- (xix) President, Indian Water Resources Society, New Delhi,
- (xx) Director.
 (R&D&SA),
 Central Wa'er Commission,
 and Head, Subject Matter
 Division.

Member-Secy.

- (xxi) Chief Consulting Engineer, Water & Power Consultancy, Services (India) Ltd. New Delhi.
- 2. Functions of the Committee shall be as follows:
- 2.1 (i) To give advise to Central and State Governments and their agencies on matters related to Irrigation and Drainage.
- (ii) To appoint special task force/expert panels to consider special problems to advise the committee.
- 2.2 (i) To prepare and periodically update the state of art in the Country in different branches of Irrigation and Drainage by collecting relevant information from national and international organisations and disseminating the same.
- (ii) To undertake studies on historical appreciation of Development of Irrigation and Drainage and introduce perspective planning for research in the field.
- (iii) To disseminate information related to Irrigation and Drainage by way of publishing journals, research news/digests.
- 2.3 (i) To recommend recognition of Centres of Excellence in different branches of Irrigation and Drainage and recommend central funding thereof.
- (ii) To recommend funding for the Infrastructural Development of Irrigation Research Institutions.
- (iii) To maintain effective co-ordination to avoid overlaps in the Research programs of the different Institutions.
- (iv) To promote programs for human resources development leading to specialization of Research Staff and recommend encouragement for the outstanding research personnel.
- 2.4 (i) To identify areas in the field of Irrigation and Drainage which need immediate attention or in which new methods are to be introduced for bringing the level of research activities in the country to international standards.

- (ii) To prepare, co-ordinate and recommend funding of research programs to be taken by the institutions in the country on basic & applied research, action research, and other areas related to research in Irrigation and Drainage.
- (di) To encourage the national institutions to take up research studies and developmental activities in the fields which have been identified by the committee as thrust/priority areas; where necessary, the committee may itself nominate the institution for undertaking research/development in a specified subject.
- (iv) To encourage voluntary professional bodies, Non-Commercial NGO's to take up R&D activities, dissemination of knowledge, participation in mass awareness program, etc. in Irrigation and Drainage.
- (v) To maintain effective cooperation with other National Committees/Boards, related GOI/State Ministries, CSIR Labs, LiT's, Eng neering Colleges and Polytechnics, Universities & other Academic Institutions.
- (vi) To encourage indigenous industry through loans to take up technological development in Irrigation and Drainage.
- (vii) To monitor the progress made by the executing institutions on research schemes in the field of Irrigation and Drainage.
- 2.5 (i) To promote and coordinate effective participation of India in the international programs related to Irrigation and Drainage and to act as national committee for such international bodies where required.
- (ii) To promote Educational and Training and Manpower Development programs in the field of Irrigation and Drainage.

(iii) To arrange and conduct seminars/conferences/workshops, to support mass awareness programs, and to arrange R&D review sessions in the Irrigation and Drainage.

3. Meeting

The Committee will meet as and when necessary, however, there shall be at least one meeting in a year.

4. Sub-Committees

The Committee may appoint a maximum of five subcommittees, each of which may have maximum of five members. The membership of the sub-committee will be restricted to the members of the Indian National Committee.

Secretariat

The Secretariat of INCID and its sub-committees will be under the administrative control of Managing Director, WAPCOS, New Delhi.

6. Expenditure:

- (a) Expenditure on account of TA/DA to official members be met from the sources from which they draw their salaries and that to non-official members will be met from the funds/grants of the Indian National Committee on Irrigation and Drainage.
- (b) Expenditure on account of activities of sceretariat and those mentioned in 6(a) above, shall be chargeable to R&D Plan Provisions.

Ordered that the above resolution may be published in the Gazette of India.

A. K. BARUA, Under Secy.